सर्वाधिक बिकनेवाली समाचार पत्रिका

माया

३१ मार्च, १९८८ मूल्य ५.००

सियाचिन :
क्या चौथे भारत-पाक युद्ध का
कारण बनेगा ?

राजीव की
लखनऊ रैली : पांच
करोड़ रुपए की
होली

त्रिपुरा :
इक्का के सत्ता में
आने के बाद

सैम पित्रोदा
राजीव के चमत्कारी सलाहकार

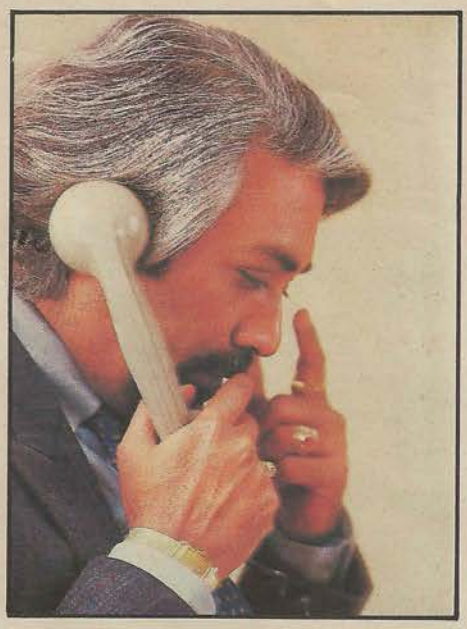

सैम पित्रोदा

राजीव के सपनों के शिल्पी

राजीव गांधी की नयी खोज हैं—सत्येन गंगाराम (सैम) पित्रोदा। भारत को तकनीकी चमत्कार का पर्याय बनाने और देश को २१वीं शताब्दी में ले जाने के अपने सपने को साकार करने का भार प्रधानमंत्री ने इन्हीं पित्रोदा को सौंपा है। लेकिन अनेक लोगों की राय में पित्रोदा मात्र सब्जबाग दिखा रहे हैं और अमरीका में मालामाल होने के बाद अब राजीव गांधी की निकटता का लाभ उठाकर भारतीय राजनीति में घुसपैठ कर रहे हैं। लोग चाहे पित्रोदा को थोपा हुआ व्यक्ति भले कहें, मगर राजीव गांधी को उनके वायदों पर पूरा यकीन है, इसलिए उन्होंने उनको राज्यमंत्री की हैसियत के साथ अपना सलाहकार बनाया है। सैम पित्रोदा कौन हैं और क्या उनमें कोई करिश्मा कर दिखाने की क्षमता है?

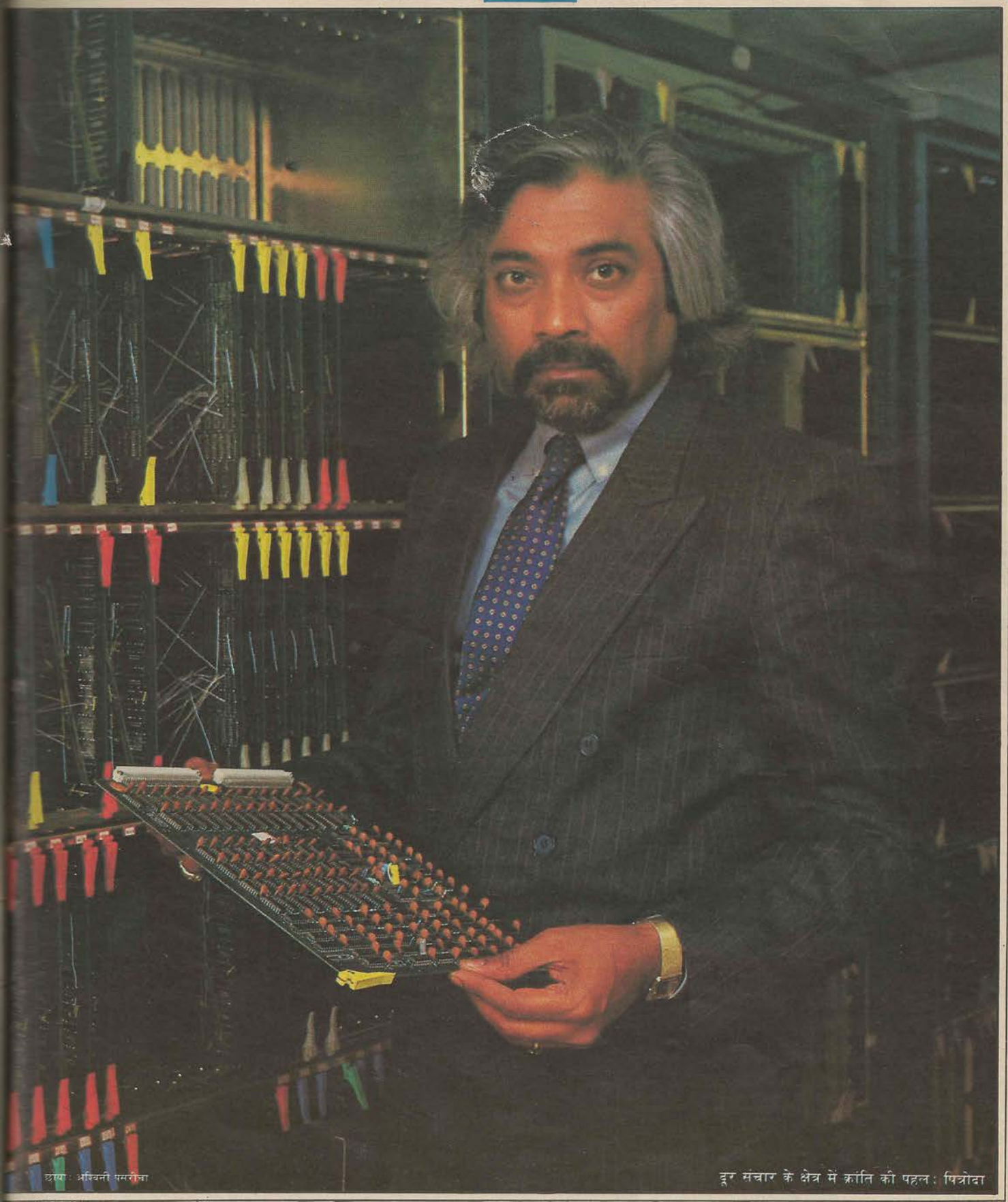

छाया : अश्विनी पमरीचा

दूर संचार के क्षेत्र में क्रांति की पहल : सैम पित्रोदा

वायदे पूरे करने हैं और रास्ता लंबा है: अपने कार्यालय में पित्रोदा

छाया: अश्विनी पसरीचा

छरहरे बदन और लंबे कद के सैम पित्रोदा के लहराते खिचड़ी बालों और बुच्ची दाढ़ी को देखकर ऐसा लगता है जैसे वह पेरिस के कलाकारों की दुनिया के बाशिंदे हों। लेकिन उनके स्वभाव की मिठास और उनके चुस्त-दुरुस्त पहनावे को देखने से वह अमरीकी शेयर बाजार के एक सफल व्यवसायी लगते हैं। वास्तव में देखा जाये, तो वह इन दोनों के ही मिश्रण हैं। वह केवल सपने नहीं देख रहे हैं, बल्कि १२ वर्षों के अंदर भारत को स्वर्ग बनाने के लिए प्रयासरत भी हैं। वह उन लक्ष्यों को प्राप्त करने की बात कर रहे हैं, जिन्हें पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से ४० साल में भी प्राप्त नहीं किया जा सका। मसलन, हर गांव में पानी का समुचित प्रबंध, सभी बच्चों को टीके लगाना और तिलहन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता। निरक्षरता दूर करने के लिए उनकी योजना भी काफी महत्वाकांक्षी है और पित्रोदा का यह अभियान यहीं खतम नहीं होगा, आगे भी जारी रहेगा।

इसी सदी के अंत तक भारत को तमाम विकसित देशों की बराबरी में खड़ा करने के लिए कटिबद्ध पित्रोदा आश्वस्त हैं कि वह तीन साल के अंदर सुपर कंप्यूटर प्राप्त कर लेंगे। यह सुपर कंप्यूटर विदेश से आयात नहीं किया जायेगा। इसे भारत में, भारत के लिए और भारतीयों द्वारा

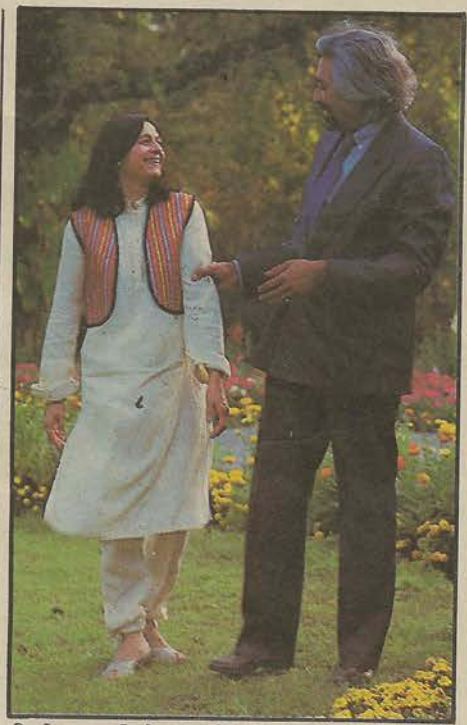

निजी क्षण: पित्रोदा पत्नी अंजना के साथ

बनाया जायेगा। पित्रोदा ने एक ऐसी अत्याधुनिक भारतीय दूरसंचार तक्नालाजी तो अभी विकसित कर ली है, जिससे पुरानी टेलीफोन लाइनों से ही न केवल बातचीत की जा सकेगी, वरन आंकड़ों, अनुकृतियों, चित्रों और वीडियो आदि को भी एक साथ प्रेषित करना संभव हो सकेगा।

पित्रोदा को 'सी-डाट' (सेंटर फार डेवलपमेंट आफ टेलीमैटिक्स) में मिल रही सफलता से बहु राष्ट्रीय दूरसंचार कंपनियों में भय की लहर दौड़ गयी है। कोई आश्चर्य नहीं होता कि 'डिजिटल स्विचिंग तक्नालाजी' के क्षेत्र में लगभग एकाधिकार रखने वाली फ्रांसीसी कंपनी 'एल्काटेल' ने पित्रोदा की इस तकनीक को खरीदने में दिलचस्पी दिखायी होगी, मगर पित्रोदा ने इस गौरवदायी प्रस्ताव को ठुकरा दिया। 'एल्काटेल' ने भारत सहित ५६ देशों को डिजिटिल स्विचिंग तक्नालाजी बेची है।

पित्रोदा की पहुंच अब राजीव गांधी से जुड़े अन्य क्षेत्रों में भी हो गयी है। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है कांग्रेस-इ के संगठन और उसकी राजनीति में उनका दखल। राजीव गांधी के कहने पर पित्रोदा ने पार्टी का कायाकल्प करने और उसे मजबूत बनाने के लिए एक योजना तैयार की है। सार्वजनिक क्षेत्र के बारे में पित्रोदा के विचारों से उत्तेजित हो एक

परिवार के साथ : पत्नी अंजना, पुत्र सलिल, पुत्री राजल के साथ पित्रोदा

व्यापारिक पत्रिका ने तो उन्हें 'जार' (रूस का निरंकुश शासक) तक कहा है। आखिरकार, आज के उनके विचार कल को सरकार की नीतियां जो बन सकते हैं। मामूली ढंग से जिंदगी शुरू करने वाले व्यक्ति को मिली यह अहमियत काफी महत्वपूर्ण है।

पित्रोदा का बचपन बहुत साधारण था। तीन भाइयों और पांच बहनों में उनका नंबर तीसरा है। १६ नवंबर, १९४२ में उनका जन्म एक गुजराती बढ़ई परिवार में हुआ था। अपने बचपन के पहले आठ साल उन्होंने उड़ीसा के एक छोटे से कस्बे पिपिलागढ़ में माता-पिता के साथ गुजारे। इसके बाद अपने दस साल बड़े भाई के साथ वह बल्लभ विद्यानगर (आनंद, गुजरात) में एक बोर्डिंग स्कूल में रहने चले गये। माता-पिता से ३००० किलोमीटर दूर रहकर दोनों भाई अपनी पूरी देखभाल खुद करते थे। गुजरात से उड़ीसा के बीच तीन दिन की रेल यात्रा ने उनके अनुभव और आत्मविश्वास को और बढ़ाया।

१४ वर्षीय सत्येन पित्रोदा ने अपने भाई के साथ बोर्डिंग स्कूल पास करके बड़ौदा के एक

१६ नवंबर, १९४२ में उनका जन्म एक गुजराती बढ़ई परिवार में हुआ था। अपने बचपन के पहले आठ साल उन्होंने उड़ीसा के एक छोटे से कस्बे पिपिलागढ़ में माता-पिता के साथ गुजारे। इसके बाद अपने दस साल बड़े भाई के साथ वह बल्लभ विद्यानगर (आनंद, गुजरात) में एक बोर्डिंग स्कूल में रहने चले गये।

अपार्टमेंट में किराये पर रहने लगे। पित्रोदा ने पुरानी यादों को ताजा करते हुए बताया, "हमने अपनी जिंदगी जीना खुद सीखा।" अब उनकी हर उस चीज में रुचि है जो रुचिकर दिखायी देती है। उस समय विज्ञान की तरफ कोई खास झुकाव नहीं था।

प्रेरणा : स्कूल के अंतिम दिनों में पित्रोदा की मुलाकात एक सहपाठी के चाचा से हुई। वह प्रोफेसर थे और उन्होंने भौतिक शास्त्र से एम०एस-सी० करने के बाद अमरीका के इलिनोइस विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रानिक्स में पीएच०डी० की थी। उनका नाम था प्रोफेसर डा० सेन इनके संपर्क में आने के बाद पित्रोदा की रुचि भौतिक शास्त्र और गणित में बढ़ गयी। अंततः उन्होंने एम०एस० यूनिवर्सिटी (बड़ौदा) से डा० सेन की देखरेख में एम०एस-सी० (भौतिक शास्त्र) की। इसी दरम्यान पित्रोदा के मन में अमरीका जाकर उच्च शिक्षा ग्रहण करने की इच्छा जागी। अंततः कुल ४०० डालर लेकर वह 'अवसरों के देश' की ओर चल पड़े। लेकिन सब कुछ इतना आसान नहीं था।

सैम पित्रोदा की कहानी, खुद की जुबानी

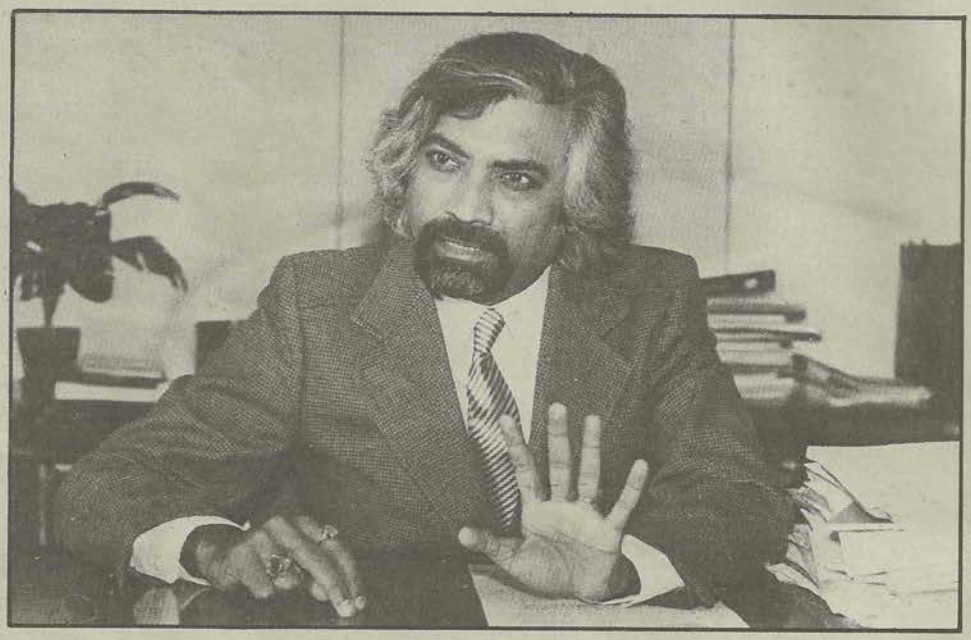

गली-कूचे में खेलने वाला कोई बच्चा यदि कुछ कर गुजरने का सपना देखता है, तो उसे सनक के सिवाय कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन मैं संभवतः इस मायने में भाग्यवान रहा कि मैं हमेशा ठीक वक्त पर, ठीक लोगों के बीच, ठीक स्थान पर मौजूद रहा। मेरे माता-पिता ने मेरी बहुत मदद की। उन्होंने मुझे बहुत सारी सुविधाएं और बहुत सारा प्यार दिया। उन्होंने मुझे कभी किसी बात के लिए हतोत्साहित नहीं किया। बहुत कम शिक्षित होने के बावजूद, उन्होने यह सब किया, इसलिए आज मैं जो कुछ हूं, इसका बहुत अधिक श्रेय उन्हीं को देता हूं।

जीवन के बारे में मेरी उस वक्त कोई धारणा ही नहीं थी। कुछ भी नहीं। वास्तव में ऐसा हो भी कैसे सकता था? यदि मैं कोई दूसरी बात कहता हूं, तो यह झूठ बोलना होगा। जब मैं ६ या १० साल का था, तो मुझे छात्रावासीय विद्यालय (बोर्डिंग स्कूल) में भेजा गया। वहां मुझे कुछ अच्छे शिक्षक मिले। तब तक हम कक्षा की पढ़ाई को ही विद्यालय समझते थे, लेकिन इसके विपरीत इन शिक्षकों के द्वारा विद्यालय के संबंध में हमारी धारणाओं को और व्यापक रूप मिला। हम नाटकों और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेने लगे। इसने हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बनाया।

मेरे माता-पिता उड़ीसा में रहते थे और मैं बड़ौदा में—इससे भी मुझे मदद मिली। बड़ौदा से ट्रेन से उनके पास आने-जाने में तीन दिन का समय लगता था, लेकिन वे कभी चिंतित नहीं हुए। उन्होंने हमें यात्रा और अध्ययन के मामले में पूरी आजादी दी। हमारे प्रति उनके इस विश्वास का ही परिणाम था कि हम वास्तव में अच्छे छात्र बन सके और बहुत सारी गतिविधियों में रुचि लेते रहे।

बचपन से ही मैं बहुत सारी बातों में रुचि लेता था। यह मेरी प्रकृति है और इसी के अनुसार मेरा आचरण होता है। मैं चित्रकारी भी करता था और नाटकों एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भी भाग लेता था। मैं यात्राएं भी आयोजित करता था। १६ साल की उम्र में मैंने पूरे देश का भ्रमण करने के लिए विश्वविद्यालय के ४० लोगों की यात्रा आयोजित की थी। शिक्षकगण मुझे हतोत्साहित नहीं करते थे। मुझे यह सब करने में आनंद आता था। मुझे अपने मित्रों से मदद भी खूब मिलती थी। हर ओर से मदद मिले बगैर आप यह सब कर भी नहीं सकते। इस प्रकार मुझे शुरू से ही अच्छे मित्र मिले। यही मेरी एक सबसे बड़ी पूंजी रही है।

हाल ही, एक ट्रक ड्राइवर मुझसे मिलने आया। जब वह आठ या नौ साल का था, तब वह मेरे साथ विद्यालय में पढ़ता था। उसने किसी गुजराती अखबार में मेरे बारे में पढ़ा और मेरे घर चला आया। स्वाभाविक रूप से दरवाजे पर तैनात गार्ड ने उसे रोक लिया, क्योंकि वह ट्रक ड्राइवर ही नजर आ रहा था। गार्ड ने उससे कहा, "साहब तो घर में नहीं है।" उसका जवाब था, "तो क्या हुआ, मैं इंतजार करूंगा।" और उसने वहीं एक घंटे तक इंतजार किया।

जब मैं वापस आया, तो मैं उससे ३० सालों बाद मिल रहा था। हम दोनों आश्चर्यचकित थे। गार्ड को आश्चर्य में डालते हुए मैं उसे घर के अंदर ले गया। हमने साथ-साथ भोजन किया। उसके बच्चों, परिवार और इस समय वह क्या कर रहा है, आदि के बारे में बातें हुईं। अतः मेरे अजीबोगरीब मित्र हैं। वास्तव में जब मेरी शादी हुई, तब मेरे पास कोई पैसा नहीं था और जब मेरे एक मित्र को इसका पता चला, तो उसने अपनी पासबुक ही मुझे दे दी और कहा, "जो आप करना चाहते हैं, करें। बैंक जायें और जितना धन चाहें निकाल लें और जब चाहें उसे वापस करें।" अतः मित्रों ने वास्तव में मेरी मदद की थी। मुझे यह अच्छा लगता था। मेरी जिंदगी एक प्रकार से 'कुछ देने और कुछ पाने' के बीच गुजरी है।

१७ साल के एक ऐसे छात्र के लिए यह

सब बड़ा मनोहारी था, जिसकी देखभाल करनेवाला कोई नहीं था। एक प्रोफेसर डा० सेन ने मुझमें रुचि ली। एमएससी में अंततः वह मेरे प्रोफेसर रहे और उन्होंने मुझमें गणित और भौतिक शास्त्र के प्रति दिलचस्पी पैदा की। एमएससी में अध्ययन के दौरान ही मैंने अमरीका जाने का मन बना लिया था। वह मेरा सपना था, इसलिए मैं वहां बिना किसी निश्चित योजना के पहुंचा था। वहां मेरा मार्गदर्शन करने या मेरे भविष्य की योजना बनानेवाला कोई नहीं था। अतः मैंने वही किया, जिसे करना मैंने जरूरी समझा। आज मैं अपने पुत्र का मार्गदर्शन कर सकता हूं। जबकि मेरे बचपन में अपने भविष्य के बारे में मुझे कुछ भी स्पष्ट नहीं था।

विवाह प्रसंग : मैं अपनी होनेवाली पत्नी से बड़ौदा में मिला था। जिस व्यक्ति ने मेरा परिचय कराया था, वह मेरे बड़े भाई का मित्र था और मेरे साथ रहने के लिए बड़ौदा आया था। उसकी सगाई मेरी भावी-पत्नी की बहन से हुई थी। एक बार हम साइकिलों से उसके घर गये। मुझे याद है, वह दरवाजे पर खड़ी थी और बेहद खूबसूरत नजर आ रही थी। वह १८ साल की थी, मैं १६ का। उसी वक्त मैंने तय कर लिया था कि मैं उससे शादी करूंगा।

मैं घर लौटा और उसके बाद उसके घर जाने और उसके पिता से दोस्ती बढ़ाने की तिकड़मों में लग गया, जिससे हम करीब आयें। अमरीका रवाना होने से पूर्व ही हमने शादी करने का फैसला कर लिया। मेरी मां ने कुछ आनाकानी जरूर की, लेकिन अंततः मेरे माता-पिता राजी हो गये, दूसरी ओर लड़की की माता को तो यह रिश्ता मंजूर था, लेकिन उसके पिता ने इसका विरोध किया, क्योंकि वह ब्राह्मण थे और मैं छोटी जाति का। फिर मैं अमरीका चला गया और चूंकि मुझे वहां कुछ साल रहना था, इसलिए सभी ने सोचा कि तब तक हालात काफी कुछ बदल चुके होंगे। मैंने लड़की के पिता को वहां से पत्र लिखा। अब हालात वास्तव में दूसरे थे।

अमरीका प्रसंग : मेरा अमरीका प्रवास बड़ा लाभदायक रहा। मुझे बेहद आत्मसंतुष्टि मिली। मैंने वहां बहुत कुछ सीखा। मैं समझता हूं, अमरीकी महान लोग हैं। वे बड़े खुले दिमाग के हैं। मैंने अमरीकी शिक्षा पद्धति के बजाय अमरीकी जीवन के रंग-ढंग से कहीं अधिक बातें सीखीं।

पिछले एक-डेढ़ सालों में मैंने समझा है कि बिना 'जानकारी' के कोई सक्रियता नहीं हो सकती, हमारे समाज में बहुत अधिक सक्रियता नहीं है, क्योंकि वहां जानकारियां नहीं हैं। सभी प्रकार की जानकारियों को लोगों तक पहुंचने से रोक लिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि 'जानकारियां' एक ताकत होती हैं और बहुत अधिक लोग यह ताकत बांटना नहीं चाहते, क्योंकि जानकारियां आपका परदाफाश भी कर सकती हैं।

रेलवे का उदाहरण हमारे सामने है। कंप्यूटर के जरिये आरक्षण शुरू कर देने से सारी समस्याएं हल नहीं हुई, लेकिन लोग खुश हैं। अब मैं किसी भी एक टिकट खिड़की पर खड़ा होकर अपना टिकट प्राप्त कर सकता हूं। यह महान उपलब्धि है।

लेकिन बैंकों में कंप्यूटर क्यों असफल हो गये? मैं इस संबंध में कुछ नहीं कह सकता। ऐसा हुआ है। पहले प्रयास में मुश्किलें आती हैं। तब हम एक या दो समाधान तलाशते हैं। आधुनिकीकरण की कोई एक चाबी नहीं होती कि आप एक चाबी घुमायें और ऐसा हो जाये। इस तरह से काम नहीं होते; यह एक विषम समस्या है और एक आदमी के पास सभी समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता।

हमारे देश में सुझाव देनेवालों की कमी नहीं है और हम हर बात में सुझाव चाहते हैं, जिसके फलस्वरूप विवाद खड़े होते हैं, जिसके कारण हम काम नहीं कर पाते।

मैं पांच बातों के संबंध में अपने विचार रख सकता हूं, तो कुछ और होंगे जो दस बातों की जानकारी रखते होंगे। मैं सब बातें नहीं जानता। यदि मैं जानकार नहीं हूं, तो बकवास करूंगा। इसीलिए मैं लोगों से कहता हूं कि मुझसे ऐसी बातें न पूछें, जिन्हें मैं नहीं जानता।

हमारे देश में सुझाव देनेवालों की कमी नहीं है और हम हर बात में सुझाव चाहते हैं, जिसके फलस्वरूप विवाद खड़े होते हैं, जिसके कारण हम काम नहीं कर पाते। यही बात 'सी-डाट' (सेंटर फार डेवलपमेंट आफ टेलीमैटिक्स) पर भी लागू होती है। हम इसी समाज के अंग हैं और हमें इस समस्या का सामना करना पड़ेगा। युवा लोगों के साथ जब मैं काम करता हूं, तो मुझे आसानी होती है। वह ज्यादा खुले होते हैं और आप उन्हें अपने हिसाब से ढाल सकते हैं।

'सी-डाट' : मेरा ऐसा कहना नहीं है कि 'सी-डाट' और प्रतिरक्षा (विभाग) के बाहर कोई 'डिजिटल टेलेंट' नहीं है। मैंने कहा था कि आज 'सी-डाट' और प्रतिरक्षा में वास्तव में डिजाइन टेलेंट (प्रारूप कौशल) है। डिजाइन कौशल और अन्य प्रकार के 'डिजिटल टेलेंट' में अंतर होता है। यदि वहां डिजाइन कौशल है, तो हमें उसे पकड़ लेना चाहिए, क्योंकि हम सर्वोत्तम लोगों को यहां लाने की कोशिश कर रहे हैं। अतः यदि लोग बिना जाने काम करने की कोशिश में लगे लोगों की आलोचना करते हैं, तो आपको बुरा लगेगा। मैं नहीं जानता था कि शेषगिरि (इलेक्ट्रानिक्स विभाग के अतिरिक्त सचिव और अब राष्ट्रीयकृत कंप्यूटर पद्धति में कार्यरत) और उनके मित्र 'एनआईसीएनइटी' (देश के सभी सरकारी कार्यालयों को परस्पर एक दूसरे से जोड़ने के लिए स्थापित राष्ट्रीयकृत कंप्यूटर पद्धति) में क्या कार्य कर रहे हैं। मैं वास्तव में इस बारे में कुछ नहीं जानता था। अतः जब मैं वहां गया, तो मैं बहुत प्रभावित हुआ। वहां जाये बिना मैं वहां के बारे में कैसे जान सकता था? सर्वज्ञ होना मेरे बस में नहीं है।

जिसे मैं नहीं जानता, मैं उसकी तारीफ भी नहीं कर सकता। एक सज्जन मेरे पास आये और बोले, "मैं चाहता हूं आप 'पद्मश्री' के लिए मेरी सिफारिश कर दें।" मैंने जवाब दिया, "मैं ऐसा नहीं कर सकता, यदि मेरे पिता भी आ जायें, तो भी मैं ऐसा नहीं कर सकता। सबसे बड़ी बात तो यह है कि मैं आपको जानता तक नहीं। अतः अच्छा यही रहेगा कि आप किसी ऐसे व्यक्ति के पास जायें, जो आपको जानता हो।" 'टेलीकाम' विभाग के मीमांसी और पिटके के लिए मैं ऐसा कर सकता हूं, क्योंकि उनके साथ मैंने काम किया है। आधे घंटे की मुलाकात में आप किसी के बारे में कोई राय नहीं बना सकते।

रजिस्टर्ड अन्वेषण : मैं अपने पेटेंट (रजिस्टर्ड) अन्वेषणों की निश्चित संख्या नहीं जानता, लेकिन इतना कह सकता हूं कि इनकी संख्या पचास या इससे अधिक होगी। पचास पेटेंट की तो मुझे निश्चित जानकारी है, इसके आगे मुझे ध्यान नहीं आ रहा। दरअसल होता यह है कि जब आप किसी अन्वेषण को पेटेंट कराने के लिए आवेदन करते हैं, तो इसमें काफी समय लग जाता है। एक अन्वेषण की मिसाल लें। एक समय मेरा 'माइक्रो प्रोसेसर कंट्रोल' यंत्र विभिन्न रूपों में विभिन्न ३४ देशों में पेटेंट था। इस तरह यदि विदेशों के मेरे सभी पेटेंटों की गणना की जाये, तो संख्या सैकड़ों में पहुंच जाती है। यदि किसी अन्वेषण का पेटेंट आपने अमरीका में कराया है, तो कनाडा के लिए आपको अलग से आवेदन करना होगा। यह पेटेंट इसी रूप में जापान में लागू नहीं हो सकता। तीन-चार सालों बाद यह स्पष्ट हुआ कि जापान में अपने अन्वेषण को पेटेंट कराने के लिए आवेदन करना बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए आपको अपने अन्वेषण का नये सिरे से लेखन करना होगा, तब इस पेटेंट का नंबर बदल जायेगा और यह भिन्न पेटेंट माना जायेगा। ■

उन्हें मास्टर डिग्री में प्रवेश तो मिल गया, लेकिन पढ़ाई और अन्य खर्चे पूरे करने के लिए उन्हें एक रासायनिक प्रयोगशाला में रोज चार घंटे काम करना पड़ता था। अंशकालिक काम का यह सिलसिला १९६७ तक चला। १९६७ में उन्हें बड़ा मौका मिला। जनरल टेलीफोन इलेक्ट्रानिक्स (जी०टी०ई०) की सहायक कंपनी आटोमेटिक जनरल लैब ने उन्हें डिजिटल स्विचिंग पर काम करने के लिए आमंत्रित किया।

सफलता: जीटीई वह स्थान था, जहां आविष्कारक पित्रोदा की प्रतिभा ने रूप लेना शुरू किया। अन्वेषणों और उनको पेटेंट कराने का सिलसिला शुरू हो गया। पित्रोदा बताते हैं, "अन्वेषणों की संख्या इतनी ज्यादा बढ़ने लगी कि उन्हें पेटेंट कराने के लिए पांच वकील लगाने पड़े।" जल्दी ही पित्रोदा की सालाना आमदनी दो लाख चालीस हजार डालर (उस समय लगभग २० लाख) हो गयी। आर्थिक संकट दूर होते ही पित्रोदा ने ब्याह रचाने के लिए अपनी प्रेमिका को भारत से अमरीका बुलवाया।

अब वह महत्वाकांक्षी हो गये थे और क्यों न होते? आखिरकार जीटीई उनके पेटेंटों से लाखों डालर बना रही थी। इसी बीच पित्रोदा की मुलाकात दो अमरीकियों, क्लिंट पेनी (६०) और एलन ब्राउन (५०) से हुई जो उनकी साझेदारी में वेस्कम इंकार्पोरेटेड कंपनी खोलने का विचार बना रहे थे। वास्तव में वह पित्रोदा पर पूंजी लगा रहे थे, क्योंकि कंपनी में पित्रोदा कोई पूंजी नहीं लगा रहे थे। उनकी यह 'प्रतिबद्धता' ही उनकी पूंजी थी कि वह डिजिटल स्विचिंग के नये उत्पाद डिजाइन करेंगे। समझौता इस बात पर हुआ था कि यदि उन्हें सफलता मिलती है, तो कंपनी में दस प्रतिशत शेयर उनके हो जायेंगे। यह एक जुआ था, जिसे पित्रोदा ने बगैर हिचकिचाहट के खेला और इसमें वह जीते भी। उनके नये पेटेंट और उनकी विपणन तकनीक पूर्णतः सफल रही और १९८० में वेस्कम का टर्न ओवर (कुल वार्षिक लेनदेन) एक करोड़ डालर तक पहुंच गया।

लेकिन इसी समय कंपनी पर मुसीबत आ गयी। क्लिंट पेनी ने अपने धन को व्यवस्थित करने और इसे अपने बच्चों को देने का फैसला कर लिया। अतः कंपनी से वह अपना धन वापस खींचना चाहता था। दूसरे साझीदार एलन ब्राउन ने भी इसी समय अपनी पत्नी से तलाक लिया था और वह दुबारा शादी करना चाहता था। इसके कारण वह अपने आर्थिक दायित्वों को पूरा करने के लिए अपने शेयर बेचना चाहता था। बहुत इच्छा होते हुए भी धन की कमी के कारण पित्रोदा कंपनी खरीद नहीं सकते थे। बिना उनकी सहमति लिये 'वेस्कम' को बेचने का फैसला कर लिया गया। विभिन्न कंपनियों से और शेयर बाजार में कंपनी को बेचने की बातचीत छह महीने तक चलती रही। आखिरकार 'राकवेल इंटरनेशनल' के साथ सौदा तय हो गया। 'राकवेल' ने ४ करोड़ रुपए में 'वेस्कम' को इस शर्त पर खरीदना तय किया कि पित्रोदा कम-से-कम तीन

कांग्रेस के कायाकल्प की योजना

जब से यह खबर फैली है कि सैम पित्रोदा ने कांग्रेस पार्टी और कांग्रेसियों के कायाकल्प के लिए एक योजना राजीव गांधी को सौंपी है, कांग्रेस के बुजुर्ग पहरेदार बौखलाये हुए हैं। पित्रोदा ने अपनी योजना में क्या कहा, इसकी पहली खबर 'माया' को मिली।

इंका नेता पित्रोदा और राजीव गांधी की निकटता को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। उनका खयाल है कि पित्रोदा इस निकटता का लाभ उठाकर राजनीति में वरिष्ठ और पारंपरिक नेताओं के ऊपर खुद को स्थापित करना चाहते हैं। पित्रोदा और उनकी योजना को महत्वहीन साबित करने के लिए पार्टी में युद्ध स्तर पर गुटबाजी भी शुरू हो गयी है। कांग्रेस-इ कार्यकारिणी समिति के सदस्य उमाशंकर दीक्षित को कुछ समय पहले राजीव गांधी ने फर्जी सदस्यता, पार्टी के सांगठनिक चुनाव और पार्टी के पुनर्गठन की जिम्मेदारी सौंपी थी। पित्रोदा द्वारा कोई योजना प्रधानमंत्री को सौंप जाने की अफवाह पर उन्होंने कहा, "इसके क्या प्रमाण हैं कि पित्रोदा ने कांग्रेस-इ पर कोई रिपोर्ट तैयार की है? आखिर कांग्रेस के बारे में वह क्या जानते हैं? मैं कांग्रेस में ४० साल से हूं और पित्रोदा जैसे नौसिखियों से मुझे सलाह लेने की जरूरत नहीं है।" वास्तव में, श्री दीक्षित ने दृढ़ता के साथ पित्रोदा की योजना को नकार दिया। लेकिन उम्र और अनुभव का महत्व अब कांग्रेस में ज्यादा नहीं है। राजीव गांधी ही पार्टी में सर्वेसर्वा हैं और उन्हीं के विचार सबसे ज्यादा अहमियत रखते हैं जो कि पित्रोदा के साथ हैं।

बहरहाल, पित्रोदा सफाई देते हैं कि यह योजना उन्होंने अपनी पहल पर नहीं तैयार की है। उनके अनुसार, राजीव गांधी ने बंबई में दिसंबर,

पार्टी के लिए संचार-तंत्र में प्रस्तावित वृद्धि

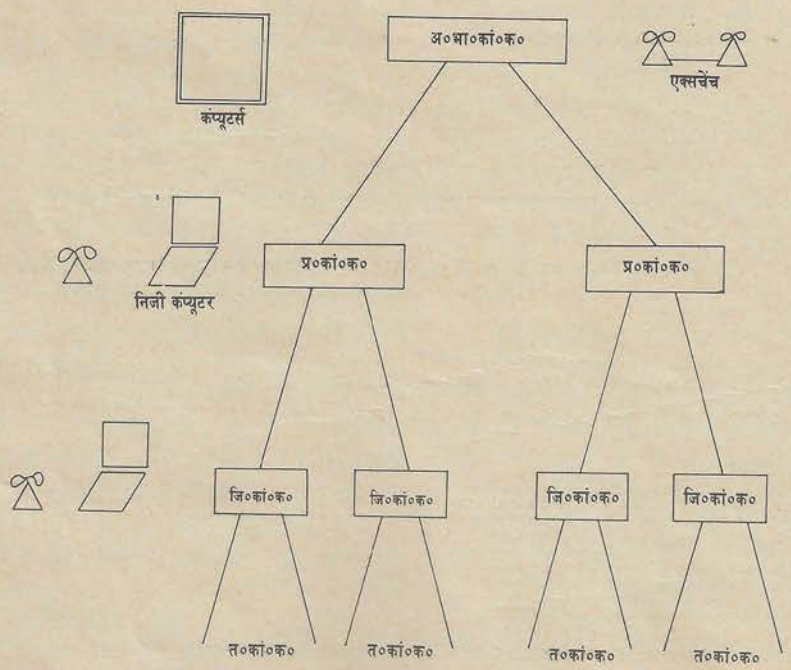

- संचार-व्यवस्था के सुधार के लिए प्रत्येक जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय में दो टेलीफोन और एक निजी कंप्यूटर होगा।
- प्रत्येक प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में दो टेलीफोन होंगे, जिसमें से एक भारतीय कांग्रेस कमेटी से संपर्क के लिए सुरक्षित रहेगी। कार्यालय में एक निजी कंप्यूटर भी होगा।
- अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पास पार्टी के आंकड़ों और अन्य कार्यों के लिए एक बड़ा कंप्यूटर और आधुनिक तकनीक से युक्त एक छोटा एक्सचेंज होगा।
- यह नेटवर्क प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी और जिला कांग्रेस कमेटी की साप्ताहिक रिपोर्टों को भेजने के लिए इलेक्ट्रानिक माध्यम भी होगा।

१९८५ में कांग्रेस के शताब्दी समारोह के बाद उनसे ऐसी योजना जल्दी-से-जल्दी तैयार करने को कहा था। कांग्रेस शताब्दी समारोह में राजीव गांधी ने कांग्रेस संगठन की मौजूदा हालत पर तीखी टिप्पणी की थी। कांग्रेस पर वैसी टिप्पणी विपक्षी नेताओं ने भी नहीं की। पित्रोदा के प्रस्ताव को जिसे 'पार्टी के निर्माण का प्रस्ताव' कहा जा रहा है १९ पेज का है और उसमें २२ जनवरी, १९८६ की तारीख पड़ी है।

योजना के सात भाग हैं—भूमिका, उद्देश्य, कार्यनीति, कार्यान्वयन (जांच, संगठन, प्रबंध सुविधाएं, प्रशिक्षण, सदस्यता और कोष वृद्धि), संसाधन आदि योजना के मुख्य मुद्दे हैं। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि इस शक्तिशाली संगठन में, जो कि देश को बहुत ऊंचाई तक ले जा सकता है, सुधार की जरूरत काफी अरसे से महसूस की जा रही है। प्रस्ताव में कहा गया है कि मौजूदा परिस्थितियों में राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत पार्टी की जरूरत और भी बढ़ गयी है, खास तौर पर राज्यों में निचले स्तर पर।

'योजना' में तर्क पेश किया गया है कि मजबूत राजनीतिक आधार और एक सक्रिय सांगठनिक मशीनरी नये वातावरण को जन्म दे सकती है। इससे मौजूदा व्यवस्था में आवश्यक सुधार हो सकेंगे और नयी पीढ़ी को नयी दृष्टि मिलेगी। प्रस्ताव में विकास कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्प जाहिर किया गया है।" पित्रोदा के अनुसार यही सब वजहें हैं, जिनके लिए कांग्रेस-इ को कायाकल्प की जरूरत है।

पहले-पहल पित्रोदा से कहा गया था कि वह आधुनिक भारत के निर्माण के लिए कांग्रेस-इ को एक आंदोलन का रूप देने की नीति तैयार करें। पित्रोदा बताते हैं, "कई गंभीर मुश्किलों के बावजूद राजनीति, प्रबंधकीय प्रतिभा, सदस्यता अभियान, सरंचना में सुधार, बेहतर प्रशिक्षण और पर्याप्त आर्थिक सहायता आदि मुद्दों पर नजर रखकर हम कांग्रेस-इ को आधुनिक भारत के निर्माण के लिए आंदोलन का रूप दे सकते हैं।" पित्रोदा की योजना की कुछ महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं:

पंचायत, ब्लाक, तालुका, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत राजनीतिक आधार के निर्माण की योजना

ऐसे नेतृत्व का चुनाव जो पार्टी के मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध, ईमानदार और आडंबर रहित हो।

ऐसे नेतृत्व का निर्माण जो देश के भविष्य के बारे में एक साफ दृष्टिकोण रखता हो।

शिविरों और संवादपत्रों के जरिये प्रभावी संचार व्यवस्था की स्थापना

सीमाओं, जिम्मेदारियों और अधिकारों का निर्धारण

निचले स्तर पर नीतियों को अमल में लाने के लिए छात्रों, युवकों महिलाओं, श्रमिकों और किसानों की भागीदारी का निर्धारण।

गरीबों के हितों के लिए कार्यक्रम तैयार करने के लिए विशेष रूप से ध्यान देना।

निचले स्तर पर पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करना, जिससे ज्यादा-से-ज्यादा मतदाताओं को आकर्षित करके चुनाव जीते जा सकें।

उक्त योजनाओं पर तेजी से कार्यान्वयन के लिए लोगों को संगठित करने और आर्थिक संसाधनों की प्राप्ति के लिए एक योजना तैयार करना।

पार्टी के कायाकल्प के लिए पित्रोदा के अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा 'समय के साथ पुरानी धारणाओं में परिवर्तन' भी है। योजना का एक काम विपक्षी पार्टियों के मुकाबले पार्टी की स्थिति और उसकी कार्यनीतियों का आकलन भी होगा। इसके लिए 'प्रतियोगात्मक विश्लेषण समूह' बनाया जायेगा।

पार्टी के कायाकल्प के लिए पित्रोदा के अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा 'समय के साथ पुरानी धारणाओं में परिवर्तन' भी है। योजना का एक काम विपक्षी पार्टियों के मुकाबले पार्टी की स्थिति और उसकी कार्यनीतियों का आकलन भी होगा।

योजना में ब्लाक स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक नयी पार्टी ढांचा तैयार करने की बात भी कही गयी है। राष्ट्रीय स्तर पर सलाह दी गयी है, "हर महासचिव को दो संयुक्त सचिव रखने चाहिए। अग्रणी संगठनों को छोड़कर सभी प्रकोष्ठों को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के अधीन रहना चाहिए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए ढांचे की रूपरेखा एक महासचिव के साथ मिलकर तैयार की जाये।"

पित्रोदा बताते हैं, "इस सबके लिए पर्याप्त संसाधनों की जरूरत है। कार्यक्षेत्र में ५००० से १०,००० तक समर्पित कार्यकर्ता, २० करोड़ रुपए ढांचे को तैयार करने के लिए और लगभग १० करोड़ रुपए प्रति वर्ष इस ढांचे को चलाने के लिए जरूरी होंगे।"

—अ०अ०

५०० पार्टी कार्यालयों पर होने वाला व्यय

० फर्नीचर	रु० ०.२ लाख/सेट	१०० लाख
० वाहन	रु० १.० लाख/सेट	५०० लाख
० आडियो विजुअल (श्रव्य-दृश्य)	रु० ०.१ लाख/सेट	५० लाख
० वीडियो, टी०वी०	रु० ०.१ लाख/सेट	५० लाख
० कंप्यूटर	रु० ०.१ लाख	५०० लाख
० कार्यालय-उपकरण (टाइपराइटर-कार्पिंग मशीन)	रु० १.० लाख	५०० लाख
० विविध (प्रशिक्षण, वीडियो प्रमोशन आदि)		३०० लाख
		२० करोड़ रु०
० ५०० पार्टी कार्यालयों को चलाने का सालाना व्यय		
० किराया, २०,००० रु०/वर्ष/कार्यालय		१०० लाख
० वेतन, एक लाख रु०/वर्ष/कार्यालय		५०० लाख
० संचार एवं यात्रा		५०० लाख
० अन्य कार्यालय व्यय एक लाख रुपए/वर्ष/कार्यालय		५०० लाख
	कुल	रुपए १६.० करोड़/वर्ष

इस लागत को दो तरीकों से कम किया जा सकता है।

० उपकरण आदि दान में प्राप्त करके

० स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं की भरती से

दस्तावेज के अनुसार, "यह निवेश मात्र पार्टी के लिए नहीं, वरन देश की एकता के लिए है।"

साल तक कंपनी में रहें और कम-से-कम दो साल तक और कहीं से डिजिटल स्विचेज पर काम न लें। इस सौदे में पित्रोदा को दस प्रतिशत यानी ५.२ करोड़ रुपए का शुद्ध फायदा हुआ। उन्हें छह लाख रुपए प्रतिमाह की तनख्वाह पर राकवेल कंपनी का उपाध्यक्ष बनाया गया।

अनुबंध की समाप्ति के बाद पित्रोदा ने राकवेल कंपनी छोड़ दी। इसके बाद वह और उनके पुत्र सलिल कई अन्य कंपनियों, जैसे—हाइब्रिड माइक्रो सर्किट बनाने वाली माइक्रो तक्नालाजी इंकार्पोरेटेड, आटोमेशन साफ्टवेयर बनानेवाली मार्केट इंकार्पोरेटेड, इलेक्ट्रानिक सुरक्षा संयंत्र बनाने वाली एकमेट इंकार्पोरेटेड और कंप्यूकार्ड बनाने वाली अन्य कंपनियों के लिए डिजाइन तैयार करने लगे। इन कंपनियों से अब भी पित्रोदा को प्रतिमाह साढ़े पांच लाख रुपए मिल रहे हैं।

भारत की ओर: १९८१ में पित्रोदा के एक मित्र ने भारत से एक अखबार की कटिंग भेजी, जिसमें दूरसंचार पर एच०सी० सरीन कमेटी बिठाये जाने की घोषणा की गयी थी। इस खबर ने पित्रोदा के मन में देशभक्ति की भावना जगा दी। इसमें धन कमाने जैसी कोई लालसा नहीं थी। वह

१९८१ में
पित्रोदा के एक मित्र ने
भारत से एक अखबार की कटिंग
भेजी, जिसमें दूरसंचार पर एच०सी०
सरीन कमेटी बिठाये जाने की
घोषणा की गयी थी। इस खबर ने
पित्रोदा के मन में देशभक्ति की
भावना जगा दी। इसमें धन कमाने
जैसी कोई लालसा
नहीं थी।

तुरंत भारत के लिए रवाना हो गये। भारत में सरीन कमेटी को उन्होंने दो घंटे तक दिखाया कि दूरसंचार के सुधार के लिए क्या-क्या किया जाना चाहिए। सरीन कमेटी ने उनके विचार तो ध्यान से सुने, मगर ज्यादा उत्साह नहीं दिखाया। लेकिन इस प्रक्रिया में पित्रोदा को पद्मश्री सीमाम्सी (दूरसंचार शोध केंद्र) और एम०वी० पिटके (टाटा इंस्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च बंबई के कंप्यूटर सिस्टम और संचार समूहों के अध्यक्ष) जैसे दूरसंचार विशेषज्ञों का समर्थन हासिल हो गया। उक्त दोनों विशेषज्ञ अब 'सी-डाट' में कार्यकारी निदेशक हैं। दूरसंचार मंत्रालय (उस समय डाक-तार मंत्रालय) के पित्रोदा की योजनाओं के खिलाफ होने पर प्रो० पिटके ने पित्रोदा को इलेक्ट्रानिक्स विभाग के सचिव पी०पी० गुप्ता से मिलने भेजा। दो विभागों की आपसी प्रतिद्वंद्विता में आखिरकार पित्रोदा को समर्थन मिल ही गया। इलेक्ट्रानिक्स आयोग के अध्यक्ष संजीवी राव ने भी उनकी योजनाओं का समर्थन किया और पित्रोदा की योजनाओं के मूल्यांकन के लिए एम०जी०के० मेनन की अध्यक्षता में एक कमेटी बिठा दी गयी।

आखिरकार पित्रोदा भी सीढ़ियां चढ़ना सीख

अब ताश के ६४ पत्ते

दुनिया में लाखों लोग ताश के बावन पत्तों से अपना मनोरंजन करते हैं, मगर पिछले ६०० सालों में किसी ने भी इन पत्तों में कोई परिवर्तन करने के बारे में नहीं सोचा। लेकिन पित्रोदा तो 'परिवर्तन' के लिए ही जी रहे हैं और उन्होंने इन पारंपरिक ५२ पत्तों के खेल में क्रांतिकारी परिवर्तन ला भी दिया। उन्होंने बादशाहों, बेगमों और गुलामों को इतिहास की टोकरी में यानी कि जहां से वह आये थे, वहीं फेंक दिया। उन्होंने विश्व में पहली बार ६४ पत्तों वाली ताश डिजाइन की, जिसे कंप्यूकार्ड्स कहा जाता है। इन पत्तों से आप वह हर खेल, खेल सकते हैं जो कि सामान्य ताश से खेला जाता है, लेकिन इस नयी ईजाद का फायदा यह है कि इसके द्वारा कंप्यूटर पर भी खेला जा सकता है।

इस ईजाद की शुरुआत तब हुई, जब एक दिन उन्होंने अपने बेटे सलिल (उस समय आठ साल का था) से पूछा कि तुम ताश क्यों नहीं खेलते? सालिल ने तुरंत जवाब दिया, "बादशाहों और बेगमों की परवाह कौन करता है। इसके मुकाबले मैं कंप्यूटर और प्रोग्रामर को ज्यादा पसंद करता हूं।" कंप्यूटर द्वारा बादशाहों-बेगमों को ग्रहण करने में कोई दिक्कत नहीं थी, लेकिन कंप्यूटर को ५२ पत्तों का हिसाब समझ में नहीं आ रहा था। अतः

एक दिन पिता-पुत्र बैठे और विश्व के पहले 'बाइनरी कार्ड्स' (६४ पत्तों वाला) का आविष्कार कर लिया।

सामान्य ताश में चार तरह के पत्ते होते हैं—पान, ईंट, चिड़ी और हुकुम और इन सभी में इक्के से लेकर दहले तक के पत्ते होते हैं। इसके बाद एक-एक गुलाम, बेगम और बादशाह होते हैं। कंप्यूकार्ड्स में ६४ पत्ते होते हैं अर्थात् १६-१६ पत्ते हर तरह के। हर सोलह के समूह में दो तरह के पत्ते होते हैं। एक समूह जोड़ने के लिए प्लस (+) और दूसरे गुणा (×) करने के लिए। इन पत्तों पर द्विगुणित क्रम में १, २, ४, ८, १६, २२, ६४, १२८, नंबर पड़े हुए हैं। इस तरह 'ईंट' के समूह में कार्ड इस तरह होंगे—१×, १+, २+, २×, ४+, ४×...१२८+, १२८×। इसे इस तरह भी समझा जा सकता है कि हर नंबर के आठ कार्ड होते हैं अर्थात् हर समूह में दो-दो। उदाहरण के लिए, एक गड्डी में ४ नंबर के कार्ड इस तरह होंगे, ४+ईंट, ४×ईंट, ४+पान, ४×पान, ४+चिड़ी, ४×चिड़ी, ४+हुकुम, ४×हुकुम। ६४ नंबर के पत्तों (+और×दोनों) को 'कंप्यूटर' और १२८ नंबर (+और×दोनों) के पत्तों को 'प्रोग्रामर' कहा जाता है। जोकर को 'साफ्टवेयर बग' (जिसे कहीं भी उपयोग किया जा सके) कहा जाता है। इस खेल में × वाली संख्या + वाली संख्या से बड़ी होती है।

पित्रोदा के अनुसार, "कंप्यूकार्ड से आप कोई भी खेल जैसे रमी, ब्रिज, पोकर आदि खेल सकते हैं। भारतीय खेलों को भी थोड़ा-बहुत परिवर्तन के साथ खेला जा सकता है। वास्तव में 'कंप्यूटरीकृत समाज' में कंप्यूकार्ड काफी लोकप्रिय हो चुके हैं और भारत में भी ये पसंद किये जाने लगे हैं।

—अ०अ०

घर या बाहर, बस एक ही धुन: पित्रोदा अपनी पत्नी व मेहमान के साथ

गये। उन्होंने राजीव गांधी से (उस समय कांग्रेस-इ के महासचिव) उनके तब के नजदीकी मित्रों अरुण नेहरू और अरुण सिंह के मार्फत इस संबंध में संपर्क साधा। इसके बाद इंदिरा गांधी के साथ उनकी बैठक करवायी। दो घंटे की बैठक में उन्होंने कई स्लाइडों द्वारा अपनी योजना समझायी। श्रीमती गांधी पित्रोदा की योजनाओं को ठीक ढंग से समझ तो नहीं सकी, लेकिन जितना वह समझीं, वह उन्हें दिलचस्प लगी। पित्रोदा बताते हैं, "मैंने जो कहा, उसका मतलब एक व्यक्ति यानी राजीव गांधी ने ही भलीभांति समझा। उन्होंने इस बात में पूरी रुचि ली कि मैं क्या कर रहा हूं।" राजीव गांधी ने भी राजनीति में पित्रोदा के इस पहले कटु अनुभव को महसूस किया। इसके बाद राजीव गांधी और पित्रोदा के बीच जल्दी-जल्दी मुलाकातें होने लगीं और अंततः दूरसंचार विभाग उनकी योजना पर अमल करने को राजी हो गया। मेनन कमेटी ने भी प्रस्ताव को अपनी सहमति प्रदान कर दी। २५ फरवरी, १९८४ को अंततः केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इस प्रस्ताव को पास भी कर दिया। इसके बाद पित्रोदा ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा, खास तौर पर राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने के बाद।

सपने साकार हुए: २५ अगस्त, १९८४ को 'सी-डाट' की औपचारिक रूप से स्थापना हो गयी। मीमाम्सी और प्रो० पिटके को कार्यकारी निदेशक

"मैंने जो कहा, उसका मतलब एक व्यक्ति यानी राजीव गांधी ने ही भलीभांति समझा। उन्होंने इस बात में पूरी रुचि ली कि मैं क्या कर रहा हूं।" राजीव गांधी ने भी राजनीति में पित्रोदा के इस पहले कटु अनुभव को महसूस किया। इसके बाद राजीव गांधी और पित्रोदा के बीच जल्दी-जल्दी मुलाकातें होने लगीं और अंततः दूरसंचार विभाग उनकी योजना पर अमल करने को राजी हो गया।

बनाया गया। लेकिन पित्रोदा के इन सफल प्रयासों के बाद भी सिवाय राजीव गांधी और पित्रोदा के साथियों के किसी को भी विश्वास नहीं था कि ३५ करोड़ के सीमित बजट से ३६ महीनों की कम अवधि में 'सी-डाट' कामयाब हो जायेगा। चुनौती थी कि देशी तकनीक और सामग्री से डिजिटल स्विच सिस्टम का एक ऐसा वर्ग विकसित किया जाये जो कि चार बड़े हिस्सों—प्राइवेट आटोमैटिक ब्रांच एक्सचेंज (पी०ए०बी०एक्स०), रूरल आटोमैटिक एक्सचेंज (आर०ए०एक्स०), मेन आटोमैटिक एक्सचेंज (एम०ए०एक्स०) और ट्रंक आटोमैटिक एक्सचेंज (टी०ए०एक्स०) से मिलकर बना हो। इस चुनौती का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि दूरसंचार के क्षेत्र की प्रसिद्ध अमरीकी कंपनी ए०टी० ऐंड टी० को डिजिटल स्विचिंग सिस्टम का एक वर्ग विकसित करने में एक दशक से ज्यादा समय लगा था और इसमें उसे अरबों डालर खर्च करने पड़े थे। यही नहीं, विश्व की सर्वश्रेष्ठ शोध प्रतिभाओं के इसमें काम करने के बाद ऐसा हुआ था। पित्रोदा ने 'सी-डाट' में ऐसी नीति अपनायी थी कि उपकरणों के विकास में कम समय और कम धन लगे तथा उनके रख-रखाव आदि में भी कम खर्च आये। इसमें वस्तुओं की गुणवत्ता और विश्वसनीयता पर भी ध्यान रखा गया था। इस सबका मतलब है कि उक्त सभी चार प्रकार की

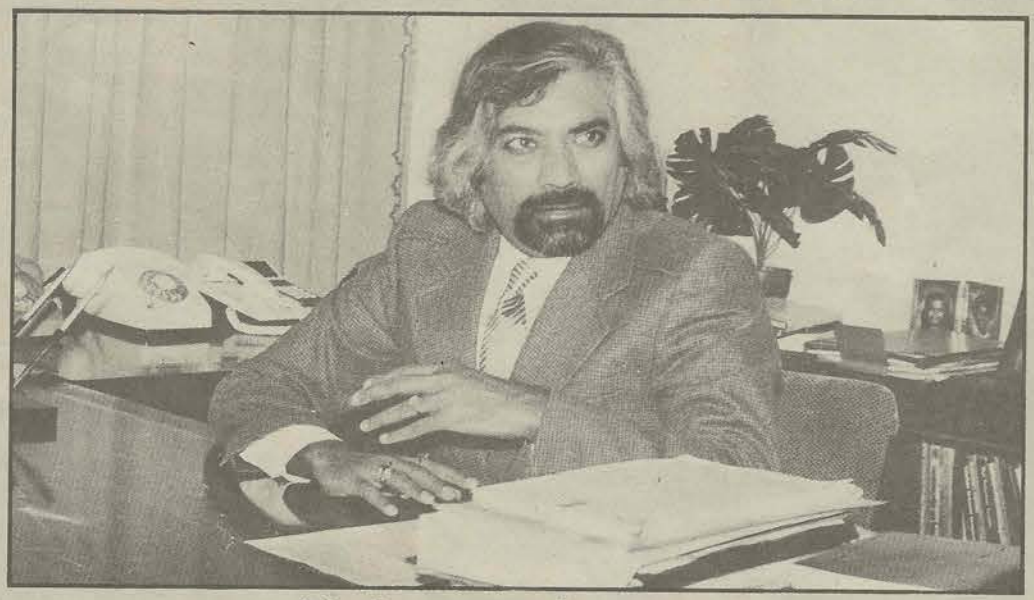

साक्षरता अभियान

हर तीन भारतीयों में से एक अनपढ़ है। इसी तरह हर चार भारतीय महिलाओं में से तीन निरक्षर हैं। राजस्थान और अरुणाचल प्रदेश जैसे राज्यों में नौ में से आठ महिलाएं अनपढ़ हैं। और यह शर्मनाक स्थिति तब है, जब हमारा आधार सरकारी आंकड़े हैं, जिनमें उसे भी साक्षर मान लिया जाता है जो अपना नाम भर लिख लेता है।

लोगों को अनपढ़ बनाये रखने में नेताओं का स्वार्थ जुड़ा रहता है, क्योंकि पढ़े-लिखे और जागरूक मतदाता की बानिस्पत अपढ़ मतदाता उनके लिए सुविधाजनक होता है। इसीलिए आजादी के बाद निरक्षरों की संख्या में कमी आने के बजाय बढ़ोत्तरी ही हुई है। १९५० के समय भारत में ३० करोड़ लोग निरक्षर थे, तो १९८७ में यह संख्या बढ़कर ४४ करोड़ हो गयी है।

बहरहाल, राजीव के लिए साक्षरता बहुत मायने रखती है। यदि वह २१ वीं सदी की बातें करते हैं, तो जरूरी है कि लोग उनकी बात को समझें भी। पित्रोदा के लिए भी संचार का कोई मतलब नहीं होगा, यदि कोई जानकारी ही न हो और जानकारी का ही क्या मतलब यदि साक्षरता न हो। इसीलिए पित्रोदा के पांच राष्ट्रीय अभियानों (नेशनल मिशन) में से एक साक्षरता अभियान है।

पित्रोदा की साक्षरता योजना में १५ से ३५ की उम्र के लोगों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। १९५१ में इस उम्र समूह में ९.१ करोड़ और १९८७ में ११ करोड़ लोग थे। पित्रोदा के अनुसार १९९१ में यह संख्या बढ़कर लगभग ११.६ करोड़ हो जायेगी। उनकी योजना के लागू होने के बाद भी १९८७-९० तक ३ करोड़ (१९८७-८८ में ७१ लाख, १९८८-८९ में १.१ करोड़ और १९८९-९० में १.२८ करोड़) लोग ही काम चलाऊ साक्षरता प्राप्त कर पायेंगे। लेकिन उन्हें विश्वास है कि १९९०-१९९५ में आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान इस उम्र समूह में निरक्षरता न केवल कम हो जायेगी, बल्कि घटने भी लगेगी। इस दौरान ५ करोड़ लोग और साक्षर होंगे। इसका मतलब यह होगा कि यदि प्राथमिक शिक्षा देने का अभियान और पित्रोदा का राष्ट्रीय साक्षरता अभियान सफलतापूर्वक पूरा होता है, तो इस उम्र समूह में निरक्षरों की संख्या ११.६ करोड़ से घटकर १.२ करोड़ रह जायेगी।

बहरहाल, यहां एक बात और ध्यान देने की है कि ये लक्ष्य पर्याप्त आर्थिक संसाधनों के अभाव में धरे रह जायेंगे। १९८७-९० की अवधि में पित्रोदा के अभियान को ५५ करोड़ रुपए दिये गये हैं। इन ५५ करोड़ रुपए से ३ करोड़ लोगों को कामचलाऊ साक्षरता प्रदान की जायेगी। अर्थात एक व्यक्ति पर लगभग १८ रुपए खर्च करने का प्रावधान है। क्या यह राशि बहुत कम नहीं है?

पेयजल अभियान

महात्मा गांधी ने कहा था, "भारत गांवों में बसता है।" आजादी के बाद की सभी सरकारों द्वारा 'गांधी दर्शन' पर अपना पूरा विश्वास जताने के बावजूद अप्रैल १९८५ तक एक लाख ६२ हजार गांवों में पीने का पानी सुलभ नहीं हो सका। यह दशा पंचवर्षीय योजनाओं और समाजवाद के खोखले नारों के चलते हुई।

पित्रोदा ने जब काम हाथ में लिया, तो उन्होंने पाया कि योजना आयोगों के दस्तावेज में जल-व्यवस्था के बारे में तो काफी कुछ है, लेकिन किसी ने भी यह प्रतिबद्धता जाहिर नहीं की कि कम-से-कम कितने गांवों में पीने के पानी की व्यवस्था करनी है और न ही किसी को इसकी जिम्मेदारी ही दी गयी। अब चूंकि यह जिम्मेदारी सभी की थी, इसलिए किसी ने भी इसे पूरा करने में दिलचस्पी नहीं दिखायी।

१९९० के अंत तक सभी गांवों में पीने के पानी की व्यवस्था करना पित्रोदा का ध्येय है। उनकी योजना का लक्ष्य है— प्रतिदिन सभी क्षेत्रों में ४० लीटर प्रतिव्यक्ति पीने के पानी की आपूर्ति करना। मरुस्थलीय क्षेत्रों में ३० लीटर प्रति जानवर के हिसाब से अतिरिक्त पानी की व्यवस्था भी करनी है। अगर इस दिशा में १९८७-८८ में लक्ष्य से २५ प्रतिशत अधिक काम हो जाता है, तो लक्ष्य को निर्धारित समय से पहले प्राप्त किया जा सकता है। मजेदार बात तो यह है कि तथाकथित समाजवादी सरकारें जो काम चार दशक में नहीं कर पायीं, उसको पित्रोदा की योजना ३०२१ करोड़ रुपए की लागत पर तीन वर्षों में ही कर देगी। इस योजना में गंदे पानी से होने वाली बीमारियों पर नियंत्रण, अधिक लौह तत्व और खारेपन को पानी से दूर करने के उद्देश्य भी शामिल हैं।

अगर पित्रोदा ऐसा कर सके, तो देश भर में सब से बड़े 'प्याऊ' के रूप में उनका स्वागत होगा। लेकिन तब, दूसरे लोग जो उन्हें पागल समझ रहे थे, पायेंगे कि उनके पागलपन में भी कुछ खास है।

टीकाकरण अभियान

भारत में हर साल २० लाख बच्चे एक बरस की उम्र के पहले ही मर जाते हैं। हर साल ३.५ लाख से भी अधिक बच्चे जन्म से ही टिटनेस के शिकार हो जाते हैं, जबकि १.७ लाख बच्चों को पोलियो हो जाता है। प्रसव के कारण मरने वाली महिलाओं के आंकड़े भी कम निराशाजनक नहीं। बच्चों की अस्वस्थता, मृत्यु-दर और गर्भवती महिलाओं की मृत्यु-दर रोकने के लिए १६ नवंबर, १६८५ को इंदिरा गांधी के जन्म दिन पर सार्वजनीन टीकाकरण कार्यक्रम का आरंभ किया गया। सैम पित्रोदा के आगमन के बाद इस कार्यक्रम की गतिविधियां तेजी से बढ़ी हैं। पहले केवल ३० जिलों में ही यह योजना लागू थी, लेकिन पित्रोदा ने इस कार्यक्रम को १६६० तक पूरे देश में लागू करने का निश्चय किया है।

वास्तव में इस कार्यक्रम का ध्येय बच्चों में डिप्थीरिया, टिटनेस, छोटी चेचक, तपेदिक, पोलियो से होने वाली अस्वस्थता और मृत्यु-दर, गर्भवती महिलाओं की टिटनेस से होने वाली मौतों को रोकना और साथ-ही-साथ टीकों का पर्याप्त उत्पादन करना है। इस अभियान के दो चरण हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय इसके कार्यान्वयन पर (टीकों का भंडारण, वितरण व मूल्य निर्धारण) और जैविक प्रविधि विज्ञान (बायोटेक्नालाजी) विभाग टीकों के अनुसंधान और विकास के लिए कार्यरत है।

पित्रोदा की योजना में टीकों की आपूर्ति करना, नीडल्स, सीरिंज जैसे उपयोगी उपकरणों का प्रबंध करना, टीकों का भंडारण, सभी क्षेत्रों में अभियान को मजबूती प्रदान करना, पर्याप्त कर्मचारियों को प्रशिक्षण, टीकों की गुणवत्ता का बारीकी से परीक्षण, टीका-उत्पादन में आत्मनिर्भर होना, ऐसी व्यवस्था करना, जिसका सहकारी स्तर पर स्वतंत्र मूल्यांकन हो सके, स्वैच्छिक संस्थाओं को टीकाकरण में लगाना, समाज में जागरुकता पैदा करना, प्रभावी सूचना-शिक्षा का प्रचार, फील्ड में टीकों के परीक्षण की नियमित सुविधाएं देना जैसे अनेक महत्वपूर्ण कार्य हैं।

अप्रैल, १६८६ तक अधिक मात्रा में टीकों का उत्पादन, जनवरी १६६० तक पोलियो के स्वदेशी टीकों का भरपूर उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। दिसंबर १६६० तक कुकुरखांसी के टीकों का पर्याप्त उत्पादन किया जायेगा।

पित्रोदा प्रचार माध्यमों का उपयोग करने की भी कोशिश कर रहे हैं। टिटनेस, कालीखांसी, डिप्थीरिया, छोटी चेचक, टी०बी०, पोलियो आदि पर आधारित सात पोस्टरों के मुद्रण और वितरण का काम भी प्रगति पर है। सात टी०वी० विज्ञापन (हिंदी में) और १३ रेडियो विज्ञापन (एक हिंदी में और १२ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में), स्कूली बच्चों के लिए रेडियो कार्यक्रम, दिल्ली, उ०प्र०, राजस्थान और मध्य प्रदेश में कठपुतली प्रदर्शन व बच्चों के लिए उक्त बीमारियों पर कहानी की किताबों की व्यवस्था की गयी है।

तिलहन अभियान

तिलहन पर राष्ट्रीय तक्नालाजी अभियान की महत्ता और आवश्यकता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि १६८१ से १६८६ के बीच ३८८४ करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा केवल तिलहन आयात करने में खर्च हुई है। अर्थात तिलहन की अपनी घरेलू जरूरत को पूरा करने के लिए भारत पूरी तरह से आयात पर निर्भर करता है। इस समय भारत प्रतिवर्ष एक करोड़ चार लाख टन तिलहन का उत्पादन करता है। पित्रोदा की योजना है कि १६६० तक यह उत्पादन बढ़ाकर एक करोड़ अस्सी लाख प्रतिवर्ष और २००० तक दो करोड़ ६० लाख टन प्रतिवर्ष तक कर लिया जाये। इसके लिए जरूरी होगा कि अभी तक की उच्चतम उत्पादन दर को दुगुना किया जाये।

अभियान के पहले चरण में तिलहन उत्पादन को बढ़ाने के बजाय स्थिर करने पर ध्यान केंद्रित किया जायेगा। भारत में आज भी तिलहन की खेती मौसम की दया पर निर्भर है। यह तिलहन की कृषिभूमि में विस्तार करके, पानी आदि की उचित व्यवस्था करके, सूखा आदि से प्रभावित न होने वाली और वैकल्पिक फसलों को लागू करके किया जायेगा।

पित्रोदा मानते हैं कि इस अभियान की सफलता बहुत कुछ किसानों के सहयोग पर निर्भर करती है। इसलिए किसानों को फायदा दिलाने की पूरी कोशिशें की जायेंगी।

भारत के सभी प्रमुख कृषि शोध संस्थान इस समय तिलहन की नयी और उपयोगी किस्में खोजने में जुटे हुए हैं। इसी साल जून के अंत तक विज्ञान एवं औद्योगिक परिषद (सी०एस०आई०आर०) कृषि संबंधी कई तकनीक तैयार कर लेगा। राष्ट्रीय तिलहन विकास परियोजना १७ राज्यों के १८० जिलों में किसानों को सहयोग देगी। चार वर्ष के अभियान में १७० करोड़ रुपए का खर्च आयेगा जिसे केंद्र और राज्य आधा-आधा बांटेंगे। —अ०अ०

'नाट डेड' : पित्रोदा

प्रणालियों को इस प्रकार से नियंत्रित किया जाना था कि कम-से-कम लागतें लगें।

बहरहाल, चुनौती केवल इतनी नहीं थी कि कम लागत में यह सिस्टम विकसित किया जाये। तक्नालाजी तो कहीं भी मिल जायेगी। चुनौती यह थी कि ऐसा सिस्टम डिजाइन किया जाये जो बिना एयरकंडीशनर के विभिन्न परिस्थितियों में काम कर सके, क्योंकि भारत असमान तापमानों वाला देश है। लद्दाख में तापमान जीरो डिगरी सेल्सियस तक चला जाता है, तो राजस्थान में ४५ डिगरी सेल्सियस तक पहुंच जाता है। इसी तरह आर्द्रता में भी अंतर रहता है। राजस्थान में गर्मियों में आर्द्रता ५ प्रतिशत हो जाती है, जबकि बरसात में तटीय क्षेत्रों में ६५ प्रतिशत तक आर्द्रता होती है। इलेक्ट्रानिक्स वस्तुओं को उच्च स्तर के रख रखाव की जरूरत होती है और विभिन्न वातावरण का उस पर दुष्प्रभाव पड़ता है। अतः ऐसे इलेक्ट्रानिक्स सिस्टम को विकसित करना एक बड़ी चुनौती है जो विभिन्न तापमानों और आर्द्रता में बगैर बिगड़े काम कर सके। इसके अलावा इस सिस्टम में दो और खासियत होनी जरूरी थी। वह धूल-निरोधक हो और कार्य का ज्यादा भार वहन करने की क्षमता रखता हो। ये चुनौतियां बहुत मुश्किल थीं और लगभग असंभव दिखायी पड़ती थीं। लेकिन पित्रोदा के नेतृत्व में 'सी-डाट' ने यह काम सफलतापूर्वक पूरा

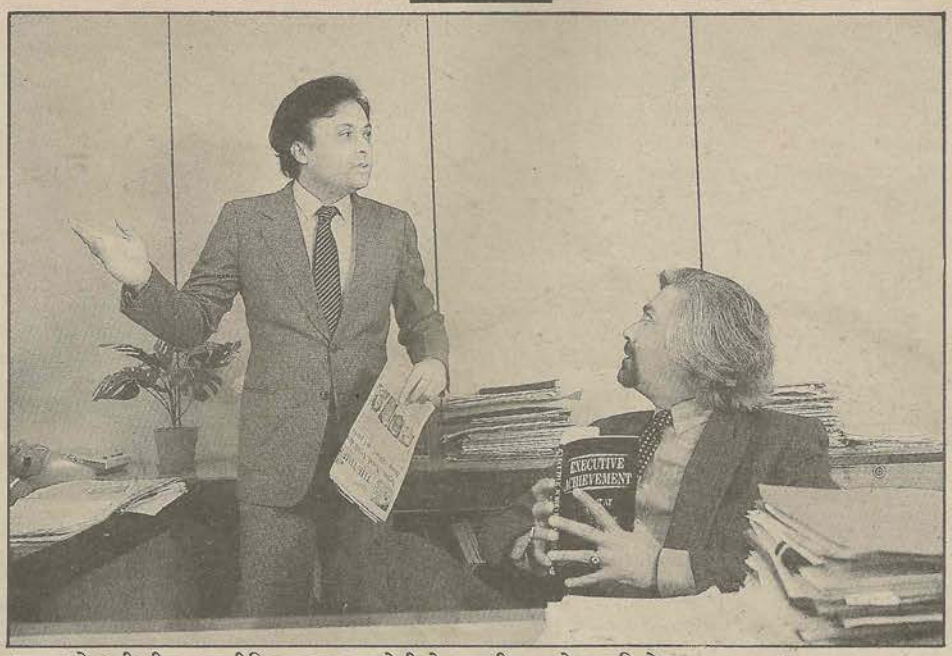

उत्साह से भरी टीम: रणनीति पर एक सहयोगी से बातचीत करते हुए पित्रोदा

कर लिया है। यह ऐसी उपलब्धि है, जिसके लिए एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका के अविकसित देशो के बाजारों में काफी गुंजाइश है। वास्तव में अगस्त १९८७ में जब यह घोषणा की गयी कि 'सी-डाट' ने ३५ करोड़ के बजाय ३० करोड़ में ही अपना काम समाप्त कर लिया, तो दूरसंचार से संबंधित सभी बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में भय की लहर दौड़ गयी। 'सी-डाट' तक्नालाजी सस्ती है और हर वातावरण में काम कर सकती है जो कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अफ्रीकी और एशियाई देशों से खदेड़ने के लिए काफी है। शायद इसीलिए फ्रांसीसी कंपनी 'एल्काटेल' ने पित्रोदा के सामने 'सी-डाट' तक्नालाजी को खरीदने का प्रस्ताव रखा था जो पित्रोदा के लिए सम्मान की बात है।

दूसरा चरण: अब 'सी-डाट' अपने दूसरे चरण में पहुंच गया है जो कि १९९० में समाप्त होगा। इस चरण में नये उपकरणों का परीक्षण किया जायेगा। साथ ही दूरसंचार प्रणाली का थोक में उत्पादन तथा उसमें अनेक सुधार करना भी इस चरण का उद्देश्य होगा। आई०एम०डी०एन० के अंतर्गत मल्टीकोर टेलीफोन लाइनों मे आवाज, आंकड़े, अनुकृतियां, चित्र और वीडियो दृश्य एक साथ प्रसारित किये जा सकेंगे। यदि भारत ने आई०एस०डी०एन० की क्षमता सैद्धांतिक स्तर पर भी प्राप्त कर ली, तो वह सबसे ज्यादा विकसित देशों की कतार में खड़ा होगा।

पित्रोदा ने अब 'सी-डाट' के लिए खुद को समर्पित कर दिया है। यद्यपि वह दिल्ली के अकबर होटल में स्थित 'सी-डाट' के आफिस में बैठकर महत्वपूर्ण परियोजनाओं की जांच-परख करते हैं, मगर उनका ध्यान प्रमुख रूप से राष्ट्रीय तक्नालाजी अभियान पर लगा हुआ है। हर सप्ताह वह कम-से-कम दो राज्यों से इस अभियान में हुई प्रगति का ब्यौरा प्राप्त करते हैं और महत्वपूर्ण सरकारी अफसरों से इसके क्रियान्वयन पर मंत्रणा करते हैं। मीमाम्सी और प्रो० पिटके जहां उनके इस 'सी-डाट' अभियान के प्रमुख स्तंभ हैं, वहीं योजना आयोग के संयुक्त सचिव जयराम उनके दाहिने हाथ की तरह हैं।

> यह वक्त ही बतायेगा कि गांव-गांव पानी पहुंचाकर आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ बनाने की योजना में पित्रोदा कितने सफल होंगे। लेकिन उनके मामले में दुर्भाग्यवश समय-सीमा राजनीतिज्ञ राजीव गांधी के साथ आश्चर्यजनक रूप से जुड़ गयी है। अत: बहुत कुछ राजीव गांधी के भविष्य पर भी निर्भर करता है।

विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार इस समय पित्रोदा भारतीय स्टील प्राधिकरण के अध्यक्ष वी० कृष्णमूर्ति के साथ सार्वजनिक क्षेत्र में सुधार के लिए भी काम कर रहे हैं। यह भी कहा जाता है कि कांग्रेस-इ के कायाकल्प के लिए उनकी बनायी योजना को राजीव गांधी ने हरी झंडी दिखा दी है और अब वह क्रियान्वयन के प्रथम चरण में है। अत: अब पित्रोदा की पहुंच केवल दूरसंचार की गतिविधियों तक ही सीमित नहीं रह गयी है। ८६ हजार करोड़ रुपए का सार्वजनिक क्षेत्र (आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक) और उसके २५ लाख कर्मचारी तथा देश की सत्तारूढ पार्टी का संगठन तक अब उनके हाथ में है, साथ ही निश्चित रूप से प्रधानमंत्री भी।

वास्तव में पित्रोदा के तरीके या योजनाएं आनेवाले वर्षों में भारतीयों की जिंदगी और रहन-सहन को नया रूप देंगी। यह वक्त ही बतायेगा कि गांव-गांव पानी पहुंचकर आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ बनाने की योजना में पित्रोदा कितने सफल होंगे। लेकिन उनके मामले में दुर्भाग्यवश समय-सीमा राजनीतिज्ञ राजीव गांधी के साथ आश्चर्यजनक रूप से जुड़ गयी है। अत: बहुत कुछ राजीव गांधी के भविष्य पर भी निर्भर करता है। यह अलग बात है कि पित्रोदा की योजनाएं इतनी सफल हो जायें कि किसी राजनीतिक फेरबदल का उन पर कोई असर न पड़े और तब वह स्वतंत्र रूप से अपने वादों को यथार्थ में बदल सकें। वैसे चर्चा यह भी है कि राजीव गांधी उन्हें राज्यसभा का आगामी चुनाव लड़वाकर उनकी सेवाएं प्राप्त करें। इस समय पित्रोदा को राज्यमंत्री का दर्जा प्राप्त है और उनका नाम उत्तर प्रदेश में एक मतदाता के रूप में दर्ज है। लेकिन यदि पित्रोदा असफल होते हैं, तो यह भारत के लिए एक त्रासदी होगी। यदि वह सफल नहीं होते; तो फिर कौन करेगा यह सब? क्योंकि मसीहा बनने के लिए हिम्मत, समर्पण और थोड़ा बहुत पागलपन जरूरी होता है।

—अभय अग्रवाल